Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 GISRRJ | Volume 8 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095
doi : https://doi.org/10.32628/GISRRJ258312

श्री योगी ईश्वरनाथ जी का जीवन परिचय

शंभूसिंह
माधव विश्वद्यालय, पिण्डवाड़ा, सिरोही (राज)

डॉ. संजय परिहार, सहायक प्रोफेसर
इतिहास विभाग, माधव विश्वद्यालय, पिण्डवाड़ा, सिरोही (राज)

Article Info
Volume 8, Issue 2
Page Number : 112-116

Publication Issue :
March-April-2025

Article History
Accepted : 05 April 2025
Published : 24 April 2025

प्रस्तावनाः–

भारतीय इतिहास मे दक्षिण भारत की राष्ट्रकुट/राठौड वंश की कन्नौज (बदायूं) शाखा से आकर मारवाड/जोधपुर में शासन स्थापित करने वाल मारवाड के राठौड वंश के आदिपुरूष रावसिहा जी थे। उन्हीं के वंशज रावजोपसा जी के पुत्र राव धोनग जी राठौड के कुल में सेरणा गॉव जिला जालोर (राज.) में अवतरित दिव्य महात्मा श्री योगी ईश्वरनाथ जी जिनका जिनकाा जालौर के प्रसिद्ध भेरूनाथ अखाडें में नाथ सम्प्रदाय के दिव्य महात्मा श्री श्री 1008 श्री शान्तिनाथ जी महाराज के पौत्र शिष्य के रूप में विशेष सम्माननीय स्थान प्राप्त है। यह उन्हीं महात्मा का जीवन परिचय है।

विस्तृत इतिहास एवं वंशावलीः–

भारतीय इतिहास में मुहणोत नेणसी री ख्यात, दयालदास की ख्यात या जोधपुर राज्य की ख्यात के अनुसार दक्षिण भारत के कन्नौज राज्य के बदायूँ शाखा से राष्ट्रकूट/राठौड शासको के साम्राज्य का राजपुताने (राजस्थान) मे मारवाड (वर्तमान जोधपुर संभाग) मे विस्तार हुआ।) पाली जिले के बिठु (देवली) के स्मारक लेख के अनुसार मारवाड राज्य के राठौड शासको के आदिपुरूष राव सीहा जी का वि.सं. 1330 (ई.स. 1273) में मृत्यु होना उल्लेखित पाया जाता है। बालेचा चौहानों व मीणाओं से रक्षा हेतु पाली के पालीवाल ब्राहम्णों ने राठौड शासक सेतराम के पुत्र राव सीहाजी (सिंहसेन) से कन्नौज से पुष्कर यात्रा के दौरान निवेदन किया तब राव सीहाजी ने खेड (पाली) राजधानी स्थापित करते हुए अपना प्रभाव क्षेत्र बढाया। द्वारिका सभा के दौरान भीनमाल व ईडर में भी लाखा फुलाणी पर विजय प्राप्त करते हुए अपना शौर्यबल स्थापित किया। उनकी छः रानियों से पांच पुत्र हुए।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

बारह जो बारोतरे पाली कियो प्रवेश। सीहो कनौज छौड ने, आयो मरूधर देस।।

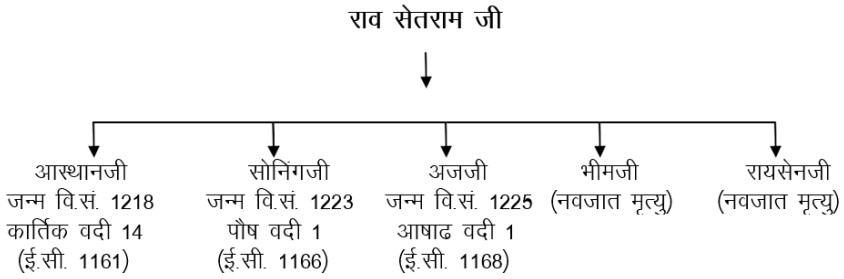

मुहणोत नैणसी की ख्यात के अनुसार राव सीहाजी की चावडी रानी के पुत्र आस्थान अपने ननिहाल मे पले एवं बाद मे पुनः पाली आकर प्रभाव स्थापित किया। आस्थान अलाउद्धीन खिलजी की सेना से लडते हुए पाली के तालाब के निकट वि.सं. 1248 वैशाख सुदी 15 (ई.स. 1191) को रणखेत रहे।

''जोधपुर राज्य की ख्यात'' के अनुसार राव आस्थान की दो राणियों से आठ पुत्र जन्मे–

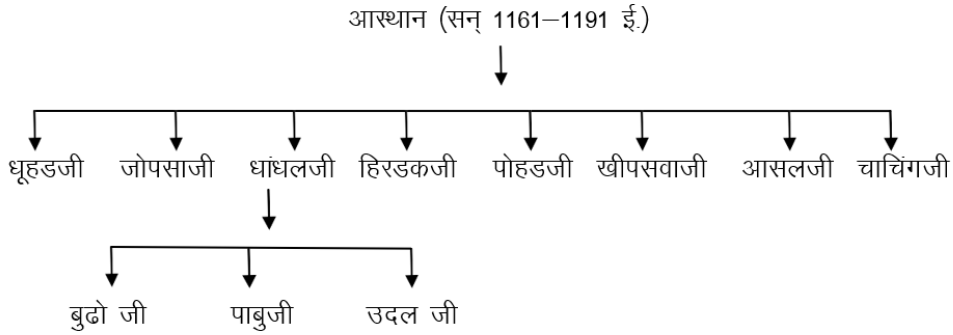

राजपुताने (राजस्थान) के इतिहास में राव धान्धल जी राठौड के वीरवर पुत्र पाबुजी व जायल (नागौर) शासक जिन्दराव खींची के बीच गौरक्षार्थ हुए सन् 1276 ईस्वी के युद्ध का जनश्रुतियों, दन्तकथाओं व लोग गीतों में बहुतायात मे वर्णन मिलता है। राजस्थान मे पांच पीरों में पाबुजी भी लोग देवता के रूप में पूजनीय है कोलु बेंगटी मे इनका पूजनीय स्थल है।

राव आस्थान जी के पुत्र जोपसा जी के ख्यातो एवं राव बहियो के अनुसार एक पुत्री एवं आठ पुत्र हुए–

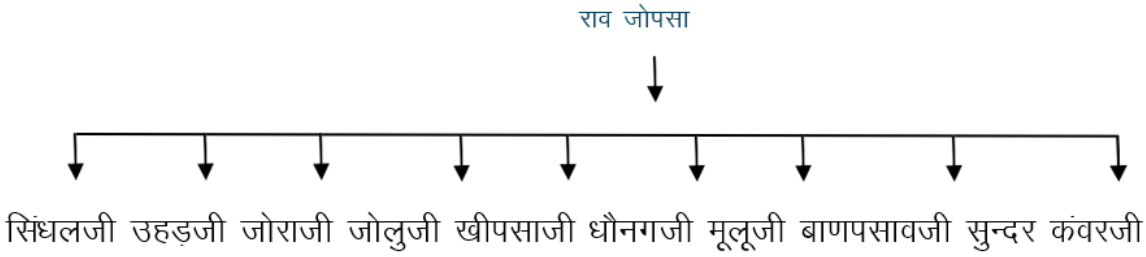

राव जोपसा ने खेड (पाली) से आकर जालोर के पास परमारो को हराकर 12 गांवों से बालवाडा गॉव जिला जालौर पर गादी स्थापित की। प्रचलित दोहा

तेरहा सौ तेरहा मे बालवाडा कियो प्रवेश।
जोपसा खेड छोडे नै, आयो नव प्रदेश।।

राव जोपसा जी की पुत्री का विवाह जालौर चौहान शासक कान्हडदेव के भतीजे से करवा रखा था। राव जोपसा की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने पर भी जालोर के चौहान शासकों द्वारा व्यंग्यात्मक मजाक कर राव (भाट) चतुरभुज को दान लेने हेतु बालवाडा आगाह करने पर स्वाभीमान के धनी जोपसा जी ने प्रजा से उधार लेकर भी राव चतुर्भूज को लाख पसाव का दान दिया। इसके बाद नाथ समप्रदाय के आराध्य श्री जलन्धर नाथजी ने राव जोपसा जी को पर्चा दिया जिसमें कई हिरे मोतियों से उनके भण्डार बताया जाता है।

राव जोपसा के बडे पुत्र सिंधल जी का परिवार शाखाएं जालोर मे अधिकाधिक फली फुली

एवं आहोर क्षेत्र में सिंधलवाटी के रूप मे जाना जाता है। राव जोपसा जी के एक अन्य पुत्र राव धोनग जी के वंशज धोनग राठौड शाखा के रूप मे जाने जाते है।

धोनग राठौडो की शाखा मे ही गॉव सेरणा जिला जालोर में नाथ सम्प्रदाय की मुख्य पीठ जालोर भेरूनाथ अखाडा के गादीपती श्री श्री 1008 श्री पीर जी शांतिनाथ जी के पौत्र शिष्य श्री योगी ईश्वरनाथ जी अवतरीत हुए।

मारवाड़ राठौड़ों के आदि पुरूष राव सिहा जी से श्री योगी ईश्वर नाथ जी तक की वशांवली

रावसिहाजी→ राव आस्थानजी→ राव जोपसाजी → राव धोनगजी→ रूद्रपालजी→ बूढोजी → पद्मसिंहजी → मूण सिंहजी → रायसलजी → सोबरोमजी → देबरोमजी → वजेसिंहजी → जैतसिंहजी → वालसिंहजी → वणवीरसिंहजी → खेतसिंहजी → नेतसिंहजी → सदसिंहजी → माधसिंहजी → खेमराजजी → ओखसिंहजी → भारमलजी → देवसिंहजी → लक्ष्मणसिंहजी → धूकसिंहजी → राणसिंहजी → श्री प्रकाशसिंहजी (श्री योगीराज ईश्वर नाथ जी)

श्रीयोगीईश्वरनाथजीकासंक्षिप्तजीवनपरिचय

जन्म – वि.सं. 2050 कार्तिक शुक्ला 2 सोमवार (दिनांक 15 नवम्बर 1993) (समय प्रातः 10:10 बजे)

जन्म स्थान – सेरणा, तहसील जसवंतपुरा, जिला–जालोर

सांसारिकनाम – श्री प्रकाश सिंह राठौड

माता–पिता का नाम – पूज्या श्रीमती सोरम कंवर सिसोदिया पत्नी श्री स्व. राणसिंह जी धोनग राठौड सेरणा

भाई – श्री प्रकाश सिंह, गुमान सिंह, नरपत सिंह, विशन सिंह,

गुरू – श्री श्री 1008 श्री गंगानाथ जी महाराज व

दादागुरू – श्री श्री 1008 श्री शांतिनाथ जी महाराज पिरजी बावजी

दीक्षा – वि.सं. 2068 ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी सोमवार (दिनांक 06.जून 2011)

श्री योगी ईश्वर नाथजी की सांसारिक जीवनी

सेरणा गांव के निवासी स्व. राणसिंह सुपुत्र धूकसिंह जी धोनग राठौड एक आम राजपुत की तरह खेती करके अपना जीवन यापन करते थे। इनकी शादी सेरणा मे ही सिसोदिया राजपुत परिवार मे हुई। स्व. श्री राणसिंह जी शुरू से शिव जी के परम भक्त थे। एक बार इनके कृषि कुएं पर बेरा खुदाई के दौरान 5 गोल– चिकने पत्थर मिले जिसके स्पर्श से चामत्कारिक अनुभव हुआ इसलिये इन्होनें वही पर उक्त पांचो पत्थरों को शिव जी, पार्वती जी, श्री गणेश जी, हनुमान जी एवं श्री शांतिनाथ जी के रूप मे पूजा पाठ शुरू किया। जहाँ बाद मे शिवजी का मंदिर भी प्रतिष्ठित करवाया गया। राणसिंह जी निःसंतान होने से उन्होनें एक बार श्री शांतिनाथ जी से आराधना की कि पुत्ररत्न प्राप्त होने पर पहला पुत्र वे नाथजी के चरणों मे अर्पित कर देगें। बावजी के चमत्कार व ईश्वरीय कृपा से राणसिंह जी के लगातार चार पुत्र रत्न प्राप्त हुए। कृतज्ञतावश राणसिंह जी ने अपने बडे पुत्र प्रकाश सिंह को बावजी को भेंट करने का निश्चय किया। प्रकाश सिंह की बाल्य शिक्षा गांव सेरणा की राजकीय विद्यालय मे सम्पन्न हुई। ताबाद आपको दक्षिण भारत की ओर रूख करने को मिला।

1द्ध श्री योगी ईश्वर नाथजी का सन्यासी रूख

18 वर्ष की उम्र में श्री योगी ईश्वर नाथ जी को गाजे बाजे के साथ ग्रामवासियों ने भीगे मन से भेरूनाथ अखाडा जालोर के गादीपति श्री शांतिनाथ जी के चरणों मे अर्पित किया। वहां भी पीरजी बावजी ने आपको विधाभारती निजी विद्यालय से आधुनिक शिक्षा से शिक्षित करवाया। वर्ष 2017 मे इनके गुरू भेरूनाथ अखाड़ा के वर्तमान गादीपति श्री श्री 1008 श्री गंगानाथ जी महाराज के कर कमलो से कानों में नाथ समप्रदाय की विशिष्ठ पहचान कुण्डल धारण कर पूर्ण तरह से नाथ समप्रदाय के रंग मे रंग गए। माघ कृष्णा द्वितीय वि. स. 2077 (30 जनवरी 2021) को सेरणा के धोनग राठौड कुल कुटुम्ब ने इनको बडे मान–सम्मान से इनके सांसारिक पैतृक गॉव सेरणा आमंत्रित कर कुटुम्बयात्रा भी सम्पन्न करवाई। श्री

ईश्वर नाथजी अभी युवा अवस्था मे है और इनको भेरूनाथ अखाडे की काफी महत्वपूर्ण जिम्मेदारीया सौंप रखी है। गौशालाओं की देखरेख के अलावा गांवों से अखाडे के लिए कटाला, टीपा आदि के लिए श्री ईश्वर नाथ जी ही मुख्यतः भ्रमण करते है। सामाजिक कुरितियों के विरूद्ध आवाज बुलन्द कर सामाजिक सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे है।

निष्कर्ष–

सारांश मे कह सकते है कि नाथ सम्प्रदाय की जालोर पीठ भेरूनाथ अखाडा का वर्तमान मे संचालन करने मे श्री ईश्वर नाथ जी की महत्वपूर्ण भूमिका है। आप सर्वसमाज मे सामाजिक सौहार्द स्थापित कर मानव धर्म को उन्नती की ओर ले जाने वाले है आपका जन्म धोनग राठौड कुल मे होने से पूरा धोनग राठौड वंश गोरवान्वित महसूस कर रहा है। आपका जीवन परिचय शोध पत्र में प्रकाशित होना अत्यावश्यक है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची –

पुस्तके :–

1. मुहणोत नैणसी – नैणसी री ख्यात, मारवाड रा परगनारी विगत।
2. गौरी शंकर हिराचन्द ओझा – जोधपुरा राज्य का इतिहास भाग–प्रथम व द्वितीय (वैदिक मंत्रालय अजमेर 1938), राजपूताने का इतिहास (राजस्थान ग्रंथागार, जोधपुर 1998)
3. सुखवीर सिंह गहलोत – जोधपुर का सांस्कृतिक वैभव (महाराजा मान सिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर–1991)
4. रामकरण आसोपा – मारवाडा का मूल इतिहास (रामकरण प्रेस, जोधपुर, 1895)
5. डॉ. हरिमोहन सक्सेना – राजस्थान का भूगोल 6. गोपीनाथ शर्मा – राजस्थान का इतिहास
7. डॉ. मोहनलाल गुप्ता – भारत का प्राचीन, मध्यकाल, आधुनिक इतिहास
8. विश्वेश्वरनाथ रेऊ–मारवाड का इतिहास (आर्कियोलोजिकल डिपार्टमेंटल, जोधपुर, 1940)
9. सेरणा गांव के रावों की बहियां
10. डॉ. महावीर सिंह गहलोत – विरम देव सोनगरा री वात।
11. हुकमीचंद जैन – राजस्थान का इतिहास, संस्कृति व परम्पराएं
12. पद्मानाभ– कान्हडदे प्रबन्ध

उपलब्ध शोध सामग्री –

प्रस्तावित शोध विषय के लिए निम्नलिखित संस्थानों व पुस्तकालयों से सामग्री संकलित करके अध्ययन किया जाएगा।

1. राजस्थान शोध संस्था चौपासनी, जोधपुर।
2. राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर।
3. महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर।
4. जिला पुस्तक सग्रहलय, जालोर
5. जालोर गजेटियर पत्रिका
6. जोधपुर राज्य का इतिहास
7. सेरणा –धाणसा गावों के स्थानीय रावों की बहियां